नई दिल्ली-पाण्डव भवन। आध्यात्मिक वार्तालाप करने के पश्चात् समूह चित्र में भारत के राष्ट्रपति महामहिम प्रणब मुखर्जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. नीलू व ब्र.कु. सविता।

नई दिल्ली। राखी बंधवाने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड पढ़ते हुए महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी। साथ हैं ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. सविता व अन्य।

दिल्ली-मजलिस पार्क। राखी बंधवाने के पश्चात् गृहमंत्री राजनाथ सिंह ब्र.कु. राजकुमारी द्वारा प्राप्त ईश्वरीय वरदान कार्ड ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए। साथ हैं ब्र.कु. शुभ्रा।

ज़िन्दगी आप पर मेहरबान हो...

मानव ज्ञान को उदर पूर्ति का साधन मान उनके साथ 'आवश्यकता' का सम्बन्ध रखे तो ज्ञान का विकास कहां से होगा! ज्ञान के भण्डारन में विद्वतापूर्ण शास्त्रों को रचा गया, संशोधन ग्रन्थ का सृजन हुआ, विज्ञान का अन्वेशन हुआ, ये सब पद-प्रतिष्ठा के लिए या नौकरी के लिए नहीं हुआ था। ज्ञान के लिए जैसे सागर को खाली करने की तत्परता ही ज्ञानी-तपस्वी का लक्षण है। जीवन एक अविराम यात्रा है। शिक्षा यात्रा का प्रेरक बल है। जैसे बच्चा घुटने के बल चलना सीखता है उसी प्रकार छोटे पशु-पक्षी भी चलने व उड़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। झरना पत्थर में से पथ शोध कर बहने का ज्ञान प्राप्त करता है। मानव के जीवन में भी सीखने की प्रक्रिया चालू ही रहती है - विद्यार्थी रूप में, गृहस्थ के गृहणी के रूप में, नौकरी के रूप में, व्यवसाय के रूप में, उद्योग के अनुभव के रूप में, वह जाने-अनजाने बहुत कुछ सीखता है।

हमारे समक्ष बहुत बड़ी चुनौति है उम्दा जीवन जीने की। लेकिन हम खुशी या प्रसन्नता को भी तोल-तोलकर स्वीकारते हैं। भाग्य पर भरोसा करना, यह आत्म-पराजय का आह्वान करने की प्रक्रिया है। संघर्ष के प्रतिकार का इंकार, ये दुःख की शरणागति स्वीकार लेने का जोखिम भरा लक्षण है। ज़िन्दगी अनुभव की `वर्कशॉप' है जो आपके व्यक्तित्व को तराशने और सुंदर घाट देने को उत्सुक है। खुशी या प्रसन्नता को `वेटिंग रूम' में बिठा देंगे तो, उन्हें आपका मेहमान बनना क्यों अच्छा लगेगा? अब्राहम लिंकन भारपूर्वक मानते थे कि ज़्यादातर लोग `उतने प्रमाण में खुश होते हैं जितने प्रमाण में वे खुश होना चाहते हैं।'

मन को जीतने के लिए, अज्ञान के भ्रम को तिलांजलि देने के लिए व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। व्यवहारिक ज्ञान आँख को खुली रखने से, अहंकार का परित्याग करने से ही मिलता है। इस संदर्भ में `मन के जीते जीत' में सूर्यासिंहाय ने लिखा है कि ब्राह्मण और नर्तकी का प्रसंग हमारे लिए मार्ग दर्शन का काम करता है। करीब 250 वर्ष पूर्व की बात है। ग्रीष्म ऋतु में दोपहर में 12 बजे एक ब्राह्मण ज्योतिष विद्या अपनाने के लिए तथा धन कमाने के लिए घोड़ी पर सवार होकर शहर की ओर जा रहा था। प्रचण्ड ताप से उनके ललाट का चंदन पिघल कर दाढ़ी पर टपक रहा था और घोड़ी भी अतिशय ताप से थक कर रुक गई - एक हवेली जैसे मकान के सामने पानी का हौज देखकर घोड़ी पानी में अपना मुँह डुबोकर पानी पीने लगी। ब्राह्मण भी एक वृक्ष की छाया में बैठकर आराम करने लगा।

इतने में हवेली में से किसी ने मधुर आवाज़ करते हुए कहा : `पधारो ब्राह्मण देवता, थोड़ा अल्पाहार लेकर, थोड़ा आराम करके फिर मुसाफिरी आरंभ करना।' ब्राह्मण ने देखा कि हवेली के द्वार पर एक बहुत सुंदर स्त्री खड़ी थी, उसके विनम्र आग्रह को ब्राह्मण अस्वीकार नहीं कर सका। घोड़ी को वृक्ष की छाया में बांधकर उसने हवेली में प्रवेश किया। उस स्त्री ने ब्राह्मण को आसन ग्रहण करने को कहा, कमरा बहुत ही सुंदर था। उस कमरे में वीणा-वादन की सामग्री व्यवस्थित रखी हुई थी। यह देखकर ब्राह्मण कुछ विचार करे, उससे पहले ही सुंदरी ने कहा : `महराज! मैं नर्तकी हूँ, नृत्य और गायन-वादन द्वारा अजीविका चलाती हूँ।'

ब्राह्मण अचंभे में पड़ विचार करने लगा कि मैं इतना प्रख्यात पंडित होकर भी एक नर्तकी का मेहमान क्यों बन गया? कोई मुझे देख लेगा तो! इतने में हवेली के बाहर के रास्ते से एक शमशान यात्रा जा रही थी। सभी राम नाम सत्य है, सत्य बोलो तो सत्य है का उच्चारण कर रहे थे।

नर्तकी ने तुरंत ही अपनी दासी को बुलाकर कहा :`ज़रा देख के आ तो, मरने वाला स्वर्ग में गया है या नर्क में?'

दासी दौड़कर बाहर गई और वापस आने के बाद उसने कहा:`मरने वाला स्वर्ग में गया है।'

ब्राह्मण को बहुत आश्चर्य हुआ। उतने में उसी रास्ते से एक दूसरी शमशान यात्रा जा रही थी। नर्तकी ने अपनी दासी को कहा :`ज़रा देख के आ तो मरने वाला स्वर्ग में गया या नर्क में?'

ब्राह्मण विचार में पड़ गया। `मैंने इतना गहरा ज्योतिष का अभ्यास किया, फिर भी स्वर्ग और नर्क के सम्बन्ध में इतने स्पष्ट रूप से बता नहीं सकता। यह नर्तकी की दासी तो विश्वास पूर्वक स्वर्ग और नर्क के बारे में बता देती है!'

नर्तकी ब्राह्मण के मन की बात समझ गई और उसने कहा:`पंडित जी, इसके पीछे ना ही कोई गणित है और ना ही ज्योतिष विद्या का ज्ञान। पहली शमशान यात्रा में सैकड़ों लोग शामिल थे और सब कंधा देने के लिए आतुर दिख रहे थे और मरने वाले का बहुत बखान कर रहे थे जबकि दूसरी शमशान यात्रा में गिने-चुने लोग ही जुड़े हुए थे और मरने वाले के प्रति दुष्कृत्य की गाथा गा रहे थे व उसकी निंदा कर रहे थे। जिसने दूसरे का भला नहीं किया हो, ऐसे मनुष्य के नसीब में स्वर्ग कहां से होगा! नर्तकी का तर्क सुनकर ब्राह्मण को एक नई दृष्टि मिली और उनका आभार मानकर उसने विदाई ली। यह थी नर्तकी की समझदारी और व्यवहारिक ज्ञान। ऐसा ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान नहीं होता...

भाग्य का भरोसा करना, ये आत्मपराजय को स्वीकारने की प्रक्रिया है। संघर्ष के प्रतिकार का इंकार, ये दुःख की शरणागति स्वीकार लेने का जोखिम भरा लक्षण है।

ज़िन्दगी आपके ऊपर मेहरबान हो, उसके लिए 7 बातों को याद रखें...

1. ज़्यादा समझदार बनने के लिए ज्ञान स्वरूप वृत्ति करो और संकल्प बल तथा आत्म-विश्वास को मज़बूत करो।
2. जीवन में पुस्तकीय ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान का समन्वय कर अपनी दृष्टि का विकास करो।
3. मन में खटास होगी तो खुशी भरा आम का पेड़ भी मीठा आम नहीं दे सकेगा। मन को सकारात्मकता के खाद द्वारा फलित रखो।
4. जीवन देवता को पलायनवादी लोग भी अच्छे नहीं लगते और घमण्डी लोग भी पसंद नहीं आते। इसीलिए विनयी और नम्र बनो।
5. जिसका कोई समाधान ही न हो, ऐसी परिस्थिति को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करो, इंकार नहीं।
6. कितने अनुपात में खुश रहना और प्रसन्न रहना, ये अपने हाथ की बात है। परिस्थिति के उल्टे अर्थघटन द्वारा दुःखी होने के जाल में फंसना नहीं।
7. तात्कालिक लाभ के लिए उदात्त जीवन मूल्यों की होली नहीं करना। -ब्र.कु.प्रियंका

गंगटोक। सिक्किम के राज्यपाल श्रीनिवास दादा साहेब पाटील को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बहन।

बलिया-उ.प्र.। खादी एवं ग्रामोद्योग मंत्री माननीय नारद राय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उमा। साथ हैं ब्र.कु. सुमन व सदर चिकित्सालय के सी.एम.ओ.।

दिल्ली-डेरावल नगर। इंदु विजयन,एन.,आई.एफ.एस.,डिप्युटि कंज़रवेटर,फॉरेस्ट को राखी बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. लता व ब्र.कु. प्रभाजोत।

दिल्ली-हरिनगर। प्रो.डॉ. रणबीर सिंह,वाइस चांसलर,नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. नेहा। साथ हैं ब्र.कु. प्रियंका व प्रो. देवेन्द्र।

सूरतगढ़-राज.। ए.डी.एम. एन.डी. मट्टई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी।